कुल पृष्ठ संख्या– 28 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या 0520399

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)			
प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	9	19	
2	4½	20	
3	10	21	
4	1½	22	
5	1½	23	
6	1½	24	
7	1½	25	
8	1½	26	
9	1½	27	
10	1½	28	
11	1½	29	
12	1½	30	
13	1½	31	
14	3	योग	55½
15	3	प्राप्तांकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	4	56	छप्पन
18	4		

परीक्षक के हस्ताक्षर

संकेतांक 3 8 1 8 7

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिए)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय कृषि विज्ञान

परीक्षा का दिन सोमवार

दिनांक 23 - 2 - 26

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालन अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3)कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज़ ही उपयोग में लिया गया है। 181 / 2026

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर ही अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगीः–
   - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिए। परीक्षार्थी उत्तर पुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केल्क्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिख कर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिए, इसकी जांच कर लें।
   - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर	
		खण्ड - अ	
	उत्तर 1)		
	i)	ब)	जीवाणु
9	ii)	अ)	0.3 - 0.7
	iii)	द)	450 - 650
	iv)	स)	बथुआ
	v)	ब)	मक्का
	vi)	अ)	ग्वार
	vii)	स)	रिकेट्स
	viii)	द)	35 मिग्रा
	ix)	द)	शील्ड कालिकायन
	x)	स)	1 x 1 x 1 मी.
	xi)	ब)	आम
	xii)	स)	रेफ्रेक्टोमीटर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	xiii)	द) हरियाणा
	xiv)	अ) 12 - 14
	xv)	स) एन्थ्रेक्स
	xvi)	ब) थनैला
	xvii)	स) 18.5
	xviii)	अ) वर्ष 2015 - 16
	2)	**रिक्त स्थान :-**
	i)	नार्थबोर्न
	ii)	प्राथमिक
	iii)	35 - 40 %
	iv)	अनावृष्टि
	v)	एनाकार्डिएसी
	vi)	परिरक्षक

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	vii)	पुर्व से पश्चिम
	viii)	मिनिएचर
4½	ix)	104 - 107° F
	x)	1600
	3)	अति लघुत्तरात्मक उत्तर :-
10		
	i)	बीजो की अंकुरण प्रतिशतता = $\frac{\text{अंकुरित बीजो की संख्या}}{\text{कुल बोये गए बीजो की संख्या}} \times 100$
	ii)	जैव उर्वरक का उदाहरण = राइजोबियम है।
	iii)	मिश्रित फसल का एक उदाहरण = मक्का + उड़द है।
	iv)	फसल चक्र का एक सिद्धांत :- इसमें किसानों की घरेलु आवश्यकता का पुरा ध्यान रखा जाता है।

BSER 181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	v)	धनिया का वानस्पतिक नाम कोरिएंड्रम सेटाइवम है।
	vii)	डब्ल्यु. एच. ओ. की अनुशंसा के आधार पर प्रति व्यक्ति को कम से कम फलों का प्रतिदिन सेवन करना चाहिए। 120 gm.
	viii)	पैबन्द कलिकायन का चित्र :-

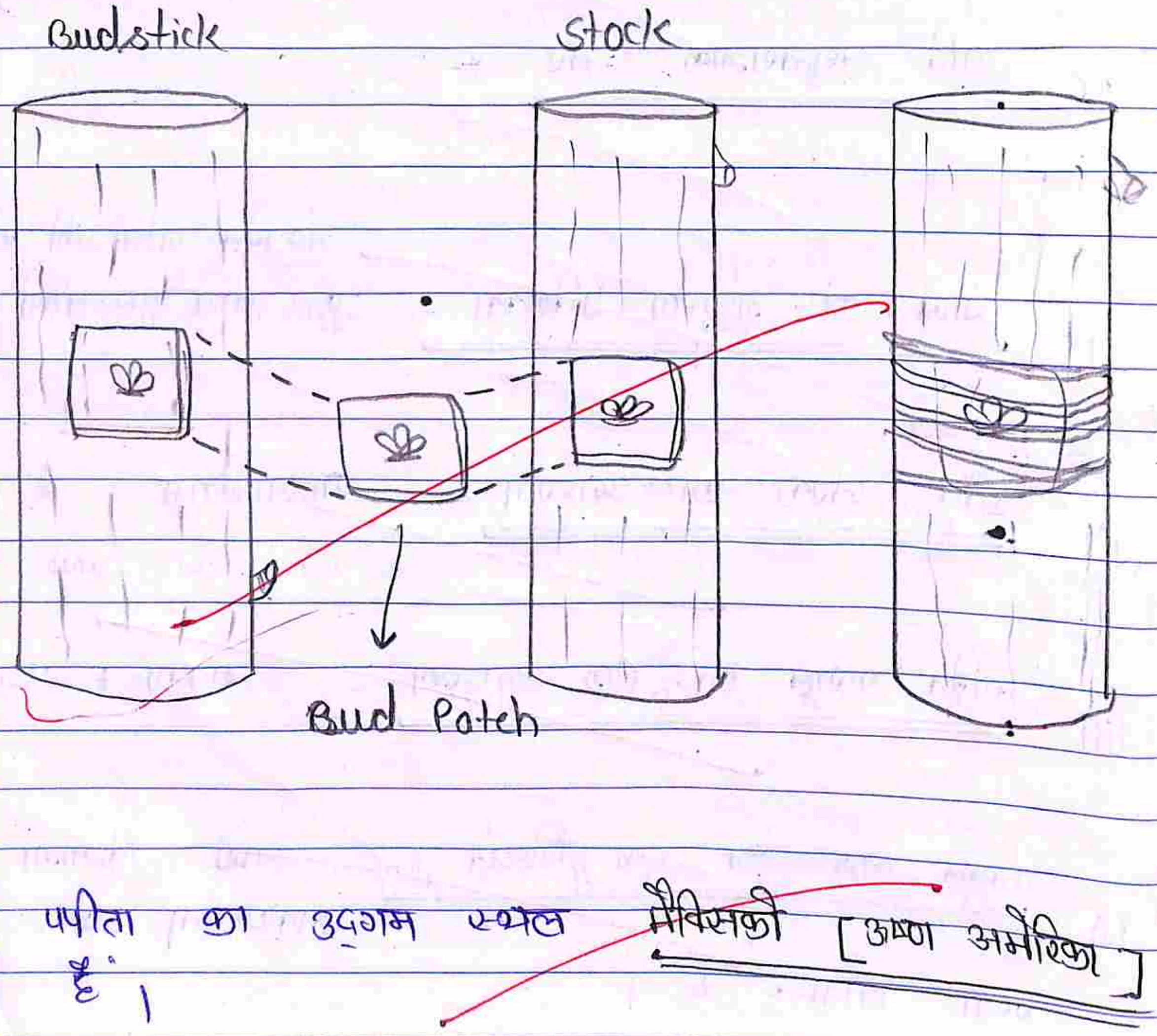

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	viii)	पपीता का उद्गम स्थल मैक्सिको [उष्ण अमेरिका] है।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

ix) 'अवलेह' [जेली] तैयार करने हेतु अमरूद व सेब उपयुक्त फल हैं।

x) राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड का मुख्यालय आनन्द [गुजरात] मे स्थित हैं।

खण्ड - ब

लघुत्तरात्मक उत्तर :-

4) मृदा के जलीय क्षरण के तीन प्रकार निम्न हैं -

i) **बौछार क्षरण :-** यह जल क्षरण की प्रथम अवस्था हैं। इसमें पानी बौछार के रूप मे गिरकर मृदा के कणों को छिन्न - भिन्न कर देता हैं।

ii) **परत क्षरण :-** इसमें परत के रूप में खेत की उपजाऊ मिट्टी जल के साथ बह जाती हैं।

iii) **रिल क्षरण :-**

6

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1½		इसमे खेत मे छोटी - छोटी नालियाँ बन जाती है। जिन्हें जुताई द्वारा हटाया जा सकता है।
	5)	**वर्मीकम्पोस्ट के तीन लाभ :-**
1½	i)	खेत मे वर्मीकम्पोस्ट डालने से दीमक व खरपतवारो का प्रकोप कम होता है।
	ii)	वर्मीकम्पोस्ट एन्टीबायोटिक्स पैदा करता है जिससे पौधे रोग प्रतिरोधी होते है।
	iii)	यह कुछ हार्मोन का भी स्राव करता है जिससे पौधो की वृद्धि होती है।
1½	6)	**बूंद - बूंद सिंचाई विधि के तीन लाभ :-**
	i)	इसकी जल उपयोग दक्षता अधिक होती है
	ii)	कीटो, रोगो व खरपतवारो का प्रकोप कम होता है क्योंकि पौधो के आस - पास का वातावरण आर्द्र नही होता है।
	iii)	इस विधि से सिंचाई करने पर 20 - 100 % उपज

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

में बढ़ोतरी होती है।

7) **खरपतवार नियंत्रण की 3 शस्य विधियाँ :-**

(1½)

i) ~~हाथ से उखाड़ना :- बहुत कम क्षेत्र में अपनायी जाती है।~~
फसल चक्र अपनाकर

ii) निराई - गुड़ाई करना :- खरपतवार की 3-4 पत्तियाँ आने पर की जाती है।

iii) जुताई करना :- ट्रैक्टर, हल, कल्टीवेटर द्वारा की जाती है।

8) **ग्राफ्टिंग [उपरोपण] :-** ऐसी विधियाँ जिसमें मुलवृन्त तथा सांकुर शाखा द्वारा नये पौधों को तैयार किया जाता है, ग्राफ्टिंग या उपरोपण कहलाती है।

(1½)

↳ **वीनीयर ग्राफ्टिंग का चित्र :-**

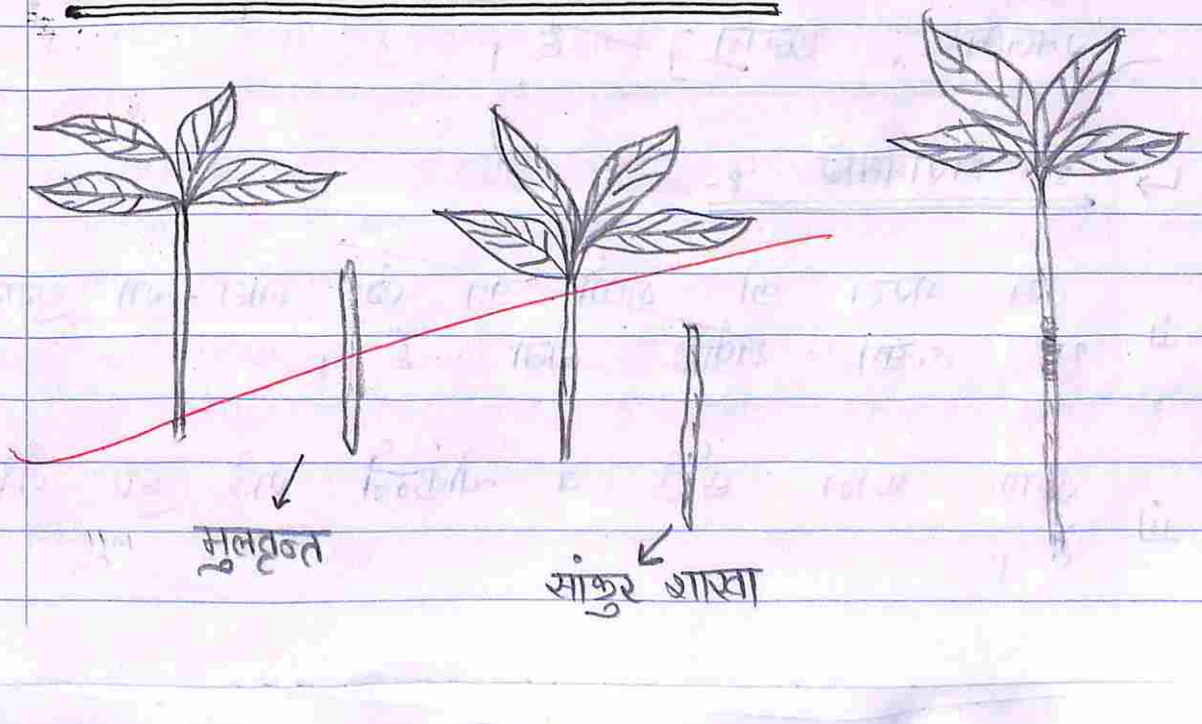

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9) **पशु आवास प्रबंधन :-**

1½

i) पशु आवास की लंबाई पूर्व से पश्चिम तथा चौड़ाई उत्तर से दक्षिण में होनी चाहिए।

ii) पशु आवास जमीन से थोड़ा ऊंचा होना चाहिए जिससे जल निकास की समुचित व्यवस्था की जा सके।

iii) पशु आवास में पर्याप्त मात्रा में सूर्य का प्रकाश आना चाहिए।

10) **मालवी**

1½

↳ **उत्पत्ति स्थान :-** इस नस्ल की गाय का मूल उत्पत्ति स्थान ~~उत्तरप्रदेश~~ मध्यप्रदेश का मालवा क्षेत्र मन्दे [मन्दसौर, रतलाम, उज्जैन] है।

↳ **2 विशेषताएँ :-**

i) इस नस्ल की गायों का रंग लोहा-सा धुसर या हल्का सफेद होता है।

ii) इसके कान छोटे व चौकन्ने खड़े हुए होते हैं।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	11)	स्वस्थ पशु के 3 सामान्य लक्षण :-
1½	i)	स्वस्थ पशु की शारीरिक, मानसिक एवं कार्यिकीय क्रियाएँ सामान्य रूप से चलना ।
	ii)	देखने पर पशु चोकन्ना, कान खड़े, चमड़ी चमकदार तथा बाल चमड़ी से लगे हुए होते हैं ।
	iii)	जुगाली सामान्य रूप से करना ।
	12)	टीक फीवर की रोकथाम एवं उपचार :-
1½	i)	रोगी पशु को स्वस्थ पशु से तुरन्त अलग कर दें ।
	ii)	मृत पशु को जमीन में गाड़ दें ।
	iii)	रोगी पशु को इन्जेक्शन एम्पीसिलिन - 3 ml. अन्तः पेशी लगाएँ ।
1½	13)	पशुओं में एफ. एम. डी वैक्सीन लगाने की आयु → गायों में 3 माह से छोटे बच्चों को नहीं लगानी चाहिए ।
	↳	भेड़ व बकरी में 2 माह से छोटे मेमनो को टीका न लगाते ।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

↳ मात्रा :- पशुओं में एफ. एम. डी. वेक्सीन की 2 ml मात्रा का उपयोग करना चाहिए।

↳ स्थान :- पशुओं में एफ. एम. डी. वेक्सीन अन्तःत्वचीय लगानी चाहिए।

खण्ड - स

दीर्घ उत्तर :-

③ 15)

ऑक्सिन

↳ यह पौधों की कलियों एवं पत्तियों में सर्वाधिक पाया जाता है।

↳ यह पौधों शीर्ष वृद्धि करने में सहायक होता है।

↳ यह पौधों में कोशिका विभाजन, फल एवं फूलों को झड़ने से रोकने में सहायक होता है।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

↳ यह प्राकृतिक एवं कृत्रिम दो प्रकार का होता है

→ **प्राकृतिक** :- इण्डोल एसिटिक एसिड [IAA]

→ **कृत्रिम** :- इसके कुछ उदाहरण हैं, NAA, IBA, 2,4-D

जिब्बेरेलिन्स

↳ यह पौधों में सुषुप्तावस्था तोड़ने में सहायक होता है

↳ आलु में सुषुप्तावस्था तोड़ने के लिए थायोयूरिया काम में लेते हैं।

↳ यह फलो को गिरने से रोकना, फुलो को झड़ने से रोकना, फलो को बीज रहित बनाना आदि मे सहायक होता है

↳ इसको सर्वप्रथम कुरोसोवा नामक किसान ने अपने खेत में देखा था।

↳ यह हार्मोन जिब्रेला फ्यूजेकोराई नामक मकड़ी से प्रथक किया गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

15) फलपाक [जैम]

↳ जैम :-

फलों के गूदे को चीनी के साथ एक निश्चित अनुपात में मिलाकर तैयार किया जाने वाला पदार्थ जैम कहलाता है।

↳ जैम बनाने की विधि :-

↳ फलों का चयन :-

सबसे पहले जैम बनाने के लिए स्वच्छ, ताजा, आकर्षक, धूल या गन्दगी रहित फलों का चयन किया जाता है। जैम बनाने के लिए सबसे उपयुक्त फल सेब को माना जाता है।

↳ फलों की तैयारी :-

फलों को अच्छी प्रकार से धोने के बाद उन्हें छीलकर छोटे - छोटे टुकड़ों में काटा जाता है। फलों को स्टील के भगोने में डालकर उबाला जाता है तथा पानी की मात्रा फल डूबने तक ही ली जाती है। फलों को गोंदने से गूदा लुगदी जैसा हो जाता है। आवश्यक होने पर इसे छाना भी जा सकता है। फलों को हिलाते रहने से जलने की सम्भावना नहीं होती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

↳ **चीनी मिलाना :-**
जैम में चीनी फलों की मात्रा, प्रकृति एवं स्वाद के अनुसार मिलायी जाती है। प्रायः मीठे फलों में 0.750 kg. तथा खट्टे फलों में 1 kg - 1.250 kg. तक चीनी मिलायी जाती है। आवश्यक होने पर नींबु का सत भी मिलाया जा सकता है।

↳ **अन्तिम बिन्दु की जाँच :-**

↳ तैयार जैम मिलायी गयी चीनी का 1.5 गुना भार का होता है।

↳ रिफ्रक्टोमीटर द्वारा जाँचने पर जैम का T.S.S 68 % आये तो समझ जाना चाहिए कि जैम तैयार है।

↳ जैम की एक बूंद पानी से भरे पात्र मे डालने पर यह बिना फैले पैंदे मे बैठ जाती है।

↳ **डिब्बों में भरना :-** तैयार जैम को पहले से निर्जलीकृत डिब्बों में भरकर भण्डारित किया जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

मेरिनो

16)

↳ **उत्पत्ति स्थान एवं वितरण :-** इस नस्ल का मूल उत्पत्ति स्थान स्पेन है, यह नस्ल स्पेन के आस - पास वाले देशों में भी पायी जाती है,

↳ **विशेषताएँ :**

↳ यह नस्ल मजबूत प्रकृति की होती है जो विपरीत कृषि जलवायु में परिस्थिति में भी जीवन यापन कर लेती है,

3

↳ इसका सिर छोटा तथा ऊन से भरा हुआ रहता है,

↳ इसके गर्दन एवं कन्धों पर सलवटें व झुर्रियाँ पायी जाती हैं,

↳ इस नस्ल के भेड़ो के नर में घुमावदार सींग पाए जाते हैं जबकि मादा ~~भेड़~~ सींग रहित होती है

↳ मेरिनो भेड़ो का रंग प्रायः सफेद होता है

↳ **उपयोगिता :-**

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

→ मेरिनो भेड़ो से तक सफेद व मोटी किस्म की 5 - 9 Kg. ऊन प्राप्त की जा सकती है ।

→ नर भेड़ का वजन 90 Kg. तथा मादा भेड़ का वजन 60 Kg. होता है ।

खण्ड - द

दीर्घ उत्तर :-

17) ## आलु

→ सामान्य जानकारी

वानस्पतिक नाम :- सोलेनम ट्युबरोसम
कुल :- सोलेनेसी
उत्पत्ति स्थान :- दक्षिणी अमेरिका
जहरीला तत्व :- सोलेनीन

i) जलवायु :-
यह रबी ऋतु की फसल है । इसकी उचित वृद्धि एवं विकास के लिए 20 - 25° C

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

तापमान की आवश्यकता होती है। इसके संवर्धन के लिए 20° C तथा पकने के लिए 25°C तथा कन्द निर्माण के लिए 17-19° C तापमान उपयुक्त रहता है। यह ठण्डी शीतोष्ण जलवायु की फसल है।

ii) बीज दर :- आलु की फसल उगाने के लिए कन्दों की आवश्यकता होती है। मध्यम आकार वाले कन्दों में 2-3 आँखो की संख्या होना आवश्यक है। आलु की फसल के लिए कन्द प्रति हेक्टेयर की दर 20-25 Kg. से उपयुक्त है।

बीजोपचार :- कन्दों को कवक जनित रोगों से बचाने के लिए 3 gm कैप्टान या 2 gm कार्बेण्डाजिम से उपचारित करते हैं। जीवाणु जनित रोगों से बचाने के लिए स्ट्रेप्टोमाइसीन 250 PPM का घोल बनाकर उपचारित कर बुआई करते हैं।

iii) चार उन्नतशील किस्में :- आलु की अच्छी खेती के लिए चार उन्नतशील किस्म निम्न है →

कुफरी चिप्सोना, कुफरी चन्द्रमुखी,

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कुफरी सोना तथा कुफरी नवताल । यह किस्में आलु अनुसंधान संस्थान शिमला [हिमाचल] से विकसित की गयी हैं।

[V] **पादप संरक्षण :-**

1 **दीमक ; कट वर्म एवं वायर वर्म :-** ये कीट पौधों की मुलायम पत्तियों एवं टहनीयों को खाकर नुकसान पहुँचाते हैं।

(4)

नियंत्रण :- इसके नियन्त्रण के लिए मिथाइल पेराथियान 25 EC या क्युनॉलफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण का छिड़काव किया जाता हैं।

1 **आलु का पछेती अंगमारी रोग :-** इस रोग के कारण आयरलैण्ड में 1845 में अकाल पड़ा था जिसे आयरिश दुर्भिक्ष के नाम से जाना जाता हैं।

नियंत्रण :- यह रोग आलु की फसल में सम्पूर्ण फैलकर उसे सम्पूर्ण रूप से नष्ट कर देता हैं। इसके लिए मैंकोजेब 2 gm या जाइनेब या मोन स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 500 PPM का 250 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव किया जाता हैं।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

18)

अनार

सामान्य जानकारी :-

वानस्पतिक नाम :- प्यूनिका ग्रेनेटम
कुल :- प्यूनिकेसी
उत्पत्ति स्थान :- ईरान
फल प्रकार :- बालुस्टा सरस
खाने योग्य भाग :- सीडकोट एरील
गुणसूत्र संख्या :- 2n = 18

i) **भूमि :-**

अनार की उचित वृद्धि एवं विकास हेतु भारी, हल्की दोमट या बलुई दोमट मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है। इसके पौधे 6. dsm^{-1} लवणता को भी सहन कर लेते हैं।

जलवायु :- अनार उष्ण व उपोष्ण जलवायु का पौधा है। यह शुष्कता के प्रति सहिष्णु है। पुष्पन के समय वर्षा होने से फल कम बनते हैं। फल पकते समय वर्षा होने से फलों की गुणवत्ता खराब हो जाती है। फल बनते समय साफ मौसम, पर्याप्त प्रकाश होना चाहिए।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

ii) चार उन्नतशील किस्में :-

गणेश

i) जालौर सीडलेस

ii) अम्लीदाना

iii) ढोलका - गुजरात में प्रसिद्ध

iv)

iii) पौध लगाने की विधि :- पौधे लगाने के लिए खड्डे ~~जुलाई मई~~ - ~~अगस्त~~ जून में खोदे जाते हैं। गड्डों को 5 x 5 मीटर की दूरी व 60 x 60 x 60 सेमी. आकार के गड्ढे खोदे जाते हैं। गड्ढे खोदने के बाद इन्हें 10-15 दिन तक खुला छोड़ देना चाहिए। बाद में 10-15 टन गोबर की खाद, आधा किलोग्राम सल्फेट ऑफ पोटाश तथा 10 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश की मात्रा डाली जाती हैं। पौधे लगाने के बाद इन्हें अच्छी तरह से भर दिया जाता है। पौधे लगाने के तुरन्त बाद सिंचाई करनी चाहिए।

iv) कीट एवं व्याधियां :-

1. अनार की तितली :- यह पौधों के कोमल एवं मुलायम भागों को खाकर नुकसान पहुंचाती हैं। इसकी वर्ष भर में एक से अधिक पीढ़िया होती हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

नियंत्रण :- इसके प्रभावी नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफास 36 SL, मिथाइल डिमाटॉन 25 EC. चूर्ण का प्रयोग कर छिड़काव किया जाता है।

2. छाल भक्षक कीट :- यह कीट पौधो के तनों व शाखाओं से चीपकर संक्रमण फैलाते हैं

नियंत्रण :- इसके लिए रूई को पेट्रोल या केरोसीन में डुबोकर छाल पर लगाया जाता है। या डाइमिथोएट 25 EC का घोल बनाकर छिड़काव किया जाता है।

व्याधियाँ :-

1. मृदुरोमिल आसिता :- इसमें पत्तियों की निचली सतह पर सफेद कवकीय वृद्धि होती है जिससे उपज में काफी गिरावट आती है।

नियंत्रण :- इसके प्रभावी नियंत्रण के लिए 2.5 gm घुलनशील गन्धक या केराथेन का उपयोग किया जाता है।

2. झुलसा रोग :- इसमें पौधो की पत्तियाँ

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

झुलस कर नष्ट हो जाती है।

4

नियंत्रण :- इसके प्रभावी नियंत्रण के लिए मैंकोजेब 2 gm या जाइनेब का घोल बनाकर छिड़काव किया जाता है।

समाप्त

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSEB-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-18I/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026